आजादी के आंदोलन की अदृश्य स्त्रियाँ

(झारखंड के विशेष संदर्भ में)

कुमारी मीरा रानी
पी-एच.डी. शोधार्थी
गांधी एवं शांति अध्ययन विभाग
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय
गांधी हिल्स, वर्धा-442001 (महाराष्ट्र)

किसी समाज में आंदोलन का उदय तब होता है जब वहाँ के लोग वर्तमान स्थिति से असंतुष्ट हों और उसमें परिवर्तन लाना चाहते हों। कई बार आंदोलन किसी परिवर्तन का विरोध करने के लिए भी किया जाता है तथा कई बार किसी विचारधारा के समर्थन में भी। किसी विचारधारा का समर्थन अथवा विरोध करने के लिए जब कुछ लोग आगे आते हैं और आम नागरिकों को उससे जोड़ने का उपक्रम करते हैं। परिणामस्वरूप बड़ी संख्या में लोग उनसे जुड़ने लगते हैं और यह असंगठित एवं अव्यवस्थित प्रयास संगठित तथा व्यवस्थित होकर आंदोलन बन जाता है।

प्रेस्टन बेलियेन के अनुसार- ''आंदोलन से किसी समूह के उस संयुक्त एवं निरंतर प्रयास का बोध होता है जो उस समूह के सदस्यों के द्वारा निर्धारित लक्ष्य अथवा लक्ष्यों की पूर्ति की दिशा में किया गया है। अधिक विशिष्ट अर्थों में- यह प्रयास किसी वर्तमान संस्था को रूपांतरित करने, बनाए रखने, हटाने अथवा नष्ट करने की दिशा में होता है।''[1]

माओत्सें तुंग कहते थे कि ''जहां भी जनता का दमन और उत्पीड़न होता है, जनता उसके खिलाफ जरूर लड़ती है।''[2]

झारखंड की जनता का इतिहास, इस सच्चाई को साबित करता है कि भारत में अंग्रेजी साम्राज्यवाद और उसके शोषण के खिलाफ जिस तरह से भारत की बाकी जनता ने संघर्ष किया, उसी तरह से झारखंड की जनता ने भी अपने जल-जंगल-जमीन की रक्षा करने का संकल्प किया। अठ्ठारहवीं और उन्नीसवीं शताब्दी का डेढ़ सौ वर्षों का इतिहास गुलामी और शोषण के खिलाफ झारखंड की जनता के महान संघर्ष

का इतिहास है। हिंदुस्तान की आजादी में झारखंड की जनता का भी योगदान रहा। झारखंडी जनता की लड़ाई की सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि झारखंड की जनता ने राजनीतिक के साथ-साथ अपनी आर्थिक मुक्ति के लिए भी लड़ाइ लड़ी। यहां सिर्फ अंग्रेजों को देश से भगान की लड़ाई नहीं हुई, बल्कि राजा, जमींदार, सूदखोर, महाजन, ठेकेदार और सरकारी अफसरों के अत्याचार और शोषण के खिलाफ भी लड़ाई हुई।

झारखंड में भी आजादी के आंदोलन की अदृश्य स्त्रियाँ :

आंदोलन	वर्ष	स्थान	गाँव	महिला नेतृत्वकर्ता
पहाड़िया आंदोलन	1772-1782	संथाल परगना		रानी सर्वेश्वरी
कोल विद्रोह	1831-1832	छोटानागपुर		सिंदराय मानकी तथा बिदराय मानकी की बहन, सुरगा मुंडा की पत्नी
संथाल (हूल) विद्रोह	1855-1856	संथाल परगना		फूलो मुर्मू तथा जानो मुर्मू (सिद्धू, कानू, चाँद, भैरव की बहन) राधा, हीरा, तारा, मोनी, रासू, भोक्तेन, भवानी (एक ही परिवार की लड़कियां)
बिरसा मुंडा आंदोलन (उलगुलान आंदोलन)	1895-1900	राँची		मकी (गया मुंडा की पत्नी), बेटीया तथा बहुएँ (गया मुंडा)
		सिंहभूम	मतागारू	गंगा मुंडरी
			कतना	चंदा मुंडरी
			करनफेल	साहा मुंडरी
			जमरा	गाला मुंडरी
			जगदा	गीरी मुंडरी
			पींगू	वीजी मुंडरी
			हरसाडीह	चसिया मुंडरी
			जिकिलता	संजा मुंडरी
			वरगलकेल	मेदनी मुंडरी
			किलनाग	राली मुंडरी
भारत छोड़ो आंदोलन	1942	हजारीबाग		सरस्वती देवी
		सिंहभूम		मुन्नी घोष
		संथाल परगना		जम्बूवती देवी, प्रेमा देवी, उषा रानी मुखर्जी

पहाड़िया आंदोलन-

पहाड़िया आंदोलन 1772 से 1782 तक संथाल परगना में हुआ। जिसका नेतृत्व रानी सर्वेश्वरी कर रहीं थीं। यह आंदोलन तिलका मांझी द्वारा किए गए आंदोलन 1798 से पूर्व हुआ। अतः झारखंड में यह पहला आंदोलन है जो अंग्रेजों के खिलाफ लड़ी गई थी।

कोल विद्रोह-

कोल विद्रोह, सबसे पहले 1820 में भी की गई थी, परंतु उस विद्रोह को पूर्ण सफलता नहीं मिली। अतः फिर से 1831-1832 में छोटानागपुर स्थान पर सिदराम मानकी, बिंदराय मानकी तथा सुरगा मुंडा द्वारा

हुआ तथा सिदराय मानकी तथा बिदराय मानकी की बहन तथा सुरगा मुंडा की पत्नी महिला नेतृत्वकर्ता थी। राँची और सिंहभूम जिले की सीमा पर कोल व्रिदोह हुआ। छोटानागपुर का महाराजा अपनी शान-शौकत के लिए बाहर से आए सिख, मुसलमान पठान व्यापारियों से बहुत-सी विलासिता की वस्तुएँ खरीदता था और दाम चुकाने के लिए रुपये पास में नहीं होने से उन्हें आदिवासी मानकियों के गाँव ठेके पर दे देता था। ये मानकी इस गांवों से राजा के लिए जो लगान हासिल करते, उसका कुछ हिस्सा उन्हें भी मिलता था, परंतु जब बाहरी व्यापारियों को लगान वसूलने के लिए उनके गाँव ठेके पर मिल गए तो मानकियों को नुकसान पहुंचा। बाहरी ठेकेदारों ने मानकियों की पुश्तैनी जमीन-जायदाद भी हड़प ली और आदिवासी किसानों पर बहुत से नए-नए टैक्स लगा दिए।

इन सब के खिलाफ यह विद्रोह हुआ और इसके परिणामस्वरूप अंग्रेजों ने अपनी पकड़ और मजबूत बनाए रखने के लिए अनेक प्रशासिक परिवर्तन किए। छोटानागपुर को दक्षिण-पूर्वी सीमांत एजेंसी का एक भाग बना दिया गया। जिसका मुख्यालय राँची था। मुंडा-मानकियों को जमींने लौटा दी गई। उधर सिंहभूम में 'हो विद्रोह' भी अंग्रेजों के लिए सिरदर्द था। अततः 1837 ई. में 'हो विद्रोह' को भी दबा दिया गया। 'हो' जनजाति और अंग्रेजों के बीच हुए समझौते के अनुसार कोल्हान क्षेत्र को दक्षिण-पश्चिम सीमांत एजेंसी में शामिल किया गया। इस 'हो' बहुल क्षेत्र को कोल्हान गवर्मेंट इस्टेट के नाम से आरक्षित जनजातीय क्षेत्र का दर्जा दिया गया और सामान्य प्रशासन के लिए परंपरागत मानकी मुंडा प्रणली को मान्यता दी गई। 'विलकिन्सन कानून' के नाम से प्रसिद्ध इस व्यवस्था में मानकी मुंडा पद्धति को वित्तीय तथा न्यायिक अधिकार भी प्रदान किए गए। उस समय अंग्रेजों का प्रतिनिधित्व कैप्टन विलकिंग्सन कर रहे थे जिनके नाम पर कानून बना।

संथाल (हूल) विद्रोह-

30 जून 1855 को बहुत संख्या लगभग 30000 संथाल भोगनाडीह में अंग्रेजों और दिक्कूओं के खिलाफ एकत्रित हुए। इस आंदोलन का पुरुष नेतृत्व सिद्धो, कानू, चाँद, भैरव ने किया तथा महिला नेतृत्व फूलो मुर्मू तथा जानो मुर्मू, जो सिद्धो, कानू, चाँद, भैरव की बहन थीं ने किया। भागनाडीह, जिला- साहेबगंज, झारखंड में है, जो दामन-ए-कोह के नाम से प्रसिद्ध है। इस आंदोलन में पुरुष, महिला तथा नौजवानों ने एक साथ, संथाल फौज का निर्माण कर आंदोलन किया। जिसमें पुरुष आक्रमण करते और गाँव को जलाते तो जितने वहां दिकू और अंग्रेज मरते, महिलाएँ और बच्चे साथ मिलकर वहां की सारी गंदगी को साफ कर देते। जिससे फिर से आने वाले दिकू तथा अंग्रेज को कोई भी जानकारी प्राप्त न हो कि कौन व्रिदोह कर रहा है। बीरभूम के मजिस्ट्रेट का कहना था कि - "संथाल महिलाएँ संथाल विद्रोह की रीढ़ हैं।"[3]

इस आंदोलन में इन महिलाओं को अंग्रेजों द्वारा गिरफ्तार किया गया- राधा, हीरा, तारा, मोनी, रासू, भोक्तेन, भवानी (सब एक ही परिवार की महिलाएँ) तथा आदिवासियों को तम्बाकू, नमक तथा मूलभूत सुविधाओं को देने पर मना कर दिया गया। यह विद्रोह संथालों ने अपनी खोई हुई जमींन की वापसी, सूदखोर,

महाजनों और सरकारी अमलों के शोषण अंग्रेजी शासन से मुक्ति पाने तथा स्वाधीन संथाल राष्ट्र कायम करने के लिए किया था।

बिरसा आंदोलन (उलगुलान आंदोलन) –

संथाल विद्रोह के 45 साल बाद राँची तथा सिंहभूम जिले में बिरसा आंदोलन हुआ। कारण - अंग्रेजी राज ने जमींदारों को अपना दलाल बनाया और आदिवासी किसानों से ज्यादा से ज्यादा लगान वसूल कर अंग्रेजों को देने को कहा। जमींदार, सूदखोर, महाजन तथा अंग्रेजी राज के कर्मचारियों ने आदिवासी किसानों की जमींन हड़प ली या थोड़ा-सा कर्ज देकर उनके खेत बंधक बना लिए या जबर्दस्ती झगड़ा-फसाद खड़ाकर उनकी जमींन पर कब्जा जमा लेते थे, जिसके कारण वे लोग गरीब ओर बेघर-बार हो रहे थे। समाज टूट रहा था, संस्कृति बिखर रही थी, जंगल पर भी अंग्रेज अपना कब्जा जमा रहे थे, तब बिरसा मुंडा ने उलिहातू गाँव में आंदोलन की शुरूआत की। महिला नेतृत्वकर्ता में गया मुंडा जो बिरसा मुंडा के सहयोगी थे, की पत्नी मकी तथा बेटियों और बहुओं ने राँची में आंदोलन किया। सिंहभूम जिले में इन महिलाओं ने अपने-अपने गाँव में नेतृत्व किया- गंगा मुंडरी, चंदा मुंडरी, साहा मुंडरी, गाला मुंडरी, गीरी मुंडरी, बीजी मुंडरी, चसिया मुंडरी, संजा मुंडरी, मेदनी मुंडरी, राली मुंडरी।

भारत छोड़ो आंदोलन -

क्रिप्स मिशन की असफलता के बाद 'भारत छोड़ो आंदोलन' 9 अगस्त 1942 ई. को संपूर्ण भारत में राष्ट्रपित महात्मा गांधी के आह्वान पर हुआ। भारतीय नेशनल कांग्रेस कमेटी की बैठक 8 अगस्त 1942 ई. को बम्बई में हुई। इसमें यह निर्णय लिया गया कि अंग्रेजों को हर हाल में भारत छोड़ना ही पड़ेगा। भारत अपनी सुरक्षा स्वयं ही करेगा और साम्राज्यवाद तथा फासीवाद के विरुद्ध रहेगा। यदि अंग्रेज भारत छोड़ देते हैं तो अस्थाई सरकार बनेगी। इस आह्वान का असर दक्षिणी बिहार प्रांत (झारखंड) में भी पड़ा। जहां की पुरुषों के साथ महिलाओं ने भी अपना योगदान दिया। हजारीबाग में आंदोलन का श्रीगणेश 11 अगस्त को हुआ। श्रीमती सरस्वती देवी को गिरफ्तार कर लिया गया। सिंहभूम में मुन्नी घोष तथा संथाल परगना में जम्बूवती देवी, प्रेमा देवी, उषा रानी मुखर्जी के नेतृत्व में जुलूस निकाला गया और वे लोग गिरफ्तार कर लिए गए।

निष्कर्ष

इन सारे आंदोलन द्वारा हम कह सकते हैं कि इन महिलाओं ने आज की संघर्षरत महिला पीढ़ी के लिए एक प्रेरणास्रोत का कार्य किया है। यह नीति-निर्धारण, राजनीति और संपत्ति में अधिक भागीदारी के संघर्ष में रत महिलाओं के लिए एक आदर्श है।

संदर्भ :

1. शर्मा, दिवाकर, 1986, सत्य साईं अभियान (एक समाजशास्त्रीय विश्लेषण) से उद्धृत, पृ.-23
2. तलवार, वीरभारत, 2008, झारखंड के आदिवासियों के बीच (एक एक्टीविस्ट के नोट्स) से उद्धृत

3. www.santhaledisom.com

संदर्भ ग्रंथ

1. शर्मा, दिवाकर, 1986, सत्य साईं अभियान (एक समाजशास्त्रीय विश्लेषण) विवेक प्रकाशन, दिल्ली
2. तलवार, वीरभारत, 2008, झारखंड के आदिवासियों के बीच (एक एक्टीविस्ट के नोट्स) भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली
3. सिंह, कुमार सुरेश, 2005 'बिरसा मुंडा और उनका आंदोलन', वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
4. महतो, शैलेंद्र, 2011, झारखंड की समरगाथा' निधि बुक्स, दिल्ली

वेबसाइट-

1. www.santhaledisom.com
2. bharat discovery.org/india/ भारत छोड़ो आंदोलन
3. https:hi.wikipedia.org/wiki/ भारत छोड़ो आंदोलन